"धर्म"

ए. एस. बलगीर

दिनांक: 14 - 3 -1989.

हर रोज हम तरह-तरह के धर्म के लोगों के सम्पर्क में आते हैं । उनमें से कोई हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई बौद्ध, जैन और कोई पारसी आदि होता है । बौद्ध और जैन धर्म को छोड़कर सभी धर्म के पैरोकार भगवान में विश्वास रखते हैं ।

धर्म का अर्थ सिर्फ मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा या गिरिजाघरों आदि में जाने तक ही सीमित नहीं होता बल्कि अपनी आदतों को अच्छा बनाकर अच्छे आदर्शों का प्रतीक बनना होता है । प्रत्येक धर्म से हमें निम्नलिखित शिक्षा प्राप्त होती है :-

- हमें सारी मानवता से प्यार करना चाहिये ।
- झूठ बोलकर या दिखावा करके झूठी शान बनाना मूर्खता होती है अतः हमें सदा सच बोलना चाहिये ।
- अपनी गलती पकड़े जाने पर माफी मांगना बड़प्पन होता है मगर अपनी गलती को दूसरों पर थोपना कायरता होती है ।
- चालाक या पाखण्डी बनकर दूसरों के साथ धोखा-धड़ी नहीं करनी चाहिये अर्थात हमें अपनी अच्छी आदतों द्वारा दूसरों ~~के~~ का मन जीतना चाहिये ।
- किसी व्यक्ति द्वारा दूसरों के लिये किये गये भलाई के कार्यों को भूलना अपराध है ।
- हमें बुरे कार्य नहीं करने चाहियें और न ही बुरे कार्यों को बढ़ावा देना चाहिये ।
- हमें अपने सोचने का दायरा अपना स्वार्थ हल करने तक ही सीमित नहीं रखना चाहिये बल्कि दूसरों की भलाई का भी ध्यान रखना चाहिये ।
- हमें किसी पर जुल्म नहीं करना चाहिये और न किसी का जुल्म सहन करना चाहिये । बल्कि जुल्म का बहादुरी के साथ मुकाबला करना चाहिये ।
- हमें स्वाभिमान से जीना चाहिये और अपने देश, समाज व परिवार की इज्जत को आंच नहीं आने देनी चाहिये ।

जो मनुष्य ऊपर लिखी बातों का ध्यान नहीं करता वह धार्मिक नहीं माना जा सकता । संसार में महात्मा गांधी, शहीद भगत सिंह, मार्टिन लूथर किंग, भीम राव अम्बेडकर, फिरोज गांधी आदि ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होंने धर्म को सही रूप में समझा और जीवन में उसका सही प्रयोग करके संसार के लोगों को दिखाया ।

यह जरूरी नहीं कि हम किसी धर्म के पैरोकार बनें लेकिन हमारे रोज के कार्यों में हमारी आदतों में अच्छे आदर्शों की झलक पड़नी चाहिये । यह भी जरूरी नहीं कि हम ज्यादा पढ़-लिख कर बड़े धार्मिक बन जायें । भारत के बहुत से गांवों के पंच व सरपंच अनपढ़ हैं मगर वे पंचायत के बहुत से फैसले अपने गांव व समाज के हित को सामने रख कर ठीक करते हैं ।

असल में धर्म मनुष्य को अच्छे और बुरी बातों/कार्यों में अन्तर सिखाता है ।

हमें अपने रोज के कार्य इतने अच्छे तरीके से करने चाहियें कि दूसरे भी उसकी सराहना करें ।